

प्राणियों में दिखाई देने लगा है ग्लोबल वार्मिंग का असर

प्रतीक्षा वर्ष १००५

दुनिया में कहते प्रदृशण और बानस्तिक आवरण में आई कमी के कारण धरती गर्म हो रही है, यह माना जा रहा है कि उद्योगों में पैदा होने वाले ध्रुएँ, खास तौर पर कार्बन डाइ आक्साइड, मीथन, नाइट्रोजन ऑक्साइड, मीएफसी और ओजोन आदि गैसों को वायुसंग्रह में मौजूदगी सूखे की अतिरिक्त गर्मी को ब्रह्मांड में वापस जाने से रोकती है, जिससे वातावरण का तापमान लगातार बढ़ रहा है। वैज्ञानिक इसे 'ग्रीनहाउस प्रभाव' कहते हैं और इससे पैदा होने वाली गर्मी को 'ग्लोबल वार्मिंग' का नाम दिया गया है, अनेक वैज्ञानिकों का मानना है कि वातावरण में आ रहे

विनाशकारी बदलाव ग्लोबल वार्मिंग का ही परिणाम है, 1998 को पिछले हिमयुग के बाद का सबसे गर्म वर्ष माना गया है, अब तक के दस सर्वाधिक गर्म वर्षों में से आठ पिछले दशक में पड़े हैं, वैज्ञानिक कहते हैं कि सन् 2050 तक धरती का तापमान औसतन 2 डिग्री बढ़ जाएगा और सदी के अंत तक यही बढ़ि 3 डिग्री सेंटीग्रेड तक पहुँच जाएगी, ऊपरी तौर पर यह बढ़ि मामूली दिखाई पड़ती है, लेकिन लगभग 20,000 वर्ष पूर्व पिछले हिमयुग का औसत तापमान आज से मात्र 6 से 8 डिग्री सेंटीग्रेड कम था, इस दृष्टि से आगामी तापमान बढ़ि की भयावहता का

अंदाज लगाया जा सकता है.

मैंस्प्रिंग के अन्तिमिति व्यवहार, जैसे सूखा, अतिवृद्धि, चक्रवात और समुद्री हलचलों को वैज्ञानिक ग्लोबल वार्मिंग से जोड़ते हैं, पिछले कुछ दशकों में ध्रुवों में इकट्ठा वर्फ के पिछलने की रफ्तार में जर्वर्दस्त तेजी दर्ज की गयी है, अमेरिकी अंतरिक्ष शोध संस्था 'नासा' के एक अध्ययन के अनुसार मौजूदा सदी के बीते-बीते आर्कटिक महासागर में गर्मी के मौसम में मिलने वाली वर्फ गायब हो चुकी होगी, 1978 से 2000 के बीच यहाँ के 12 लाख वर्ष किमी क्षेत्र से वर्फ पूरी तरह समाप्त हो चुकी थी, नासा के

वैज्ञानिक कार्मिकों के अनुमान यदि वर्फ के स्थायी आवरण समाप्त होने पर आर्कटिक महासागर की पार्श्वस्थितिको में बुनियादी बदलाव आयेंगे, जिसमें ग्लोबल वार्मिंग को नया आवंग मिलेगा तथा ध्रुवीय भालुओं का अभिन्न समाप्त हो जाएगा,

तापमान बढ़ि का असर अब जीव-जंतुओं और पौधों पर भी दिखाई देने लगा है, विज्ञान परिविका 'नेचर' के तांजा अंक में प्रकाशित एक शोध अध्ययन के अनुसार मेढ़क से लेकर फूलदार पौधों तक में स्पष्ट दिखाई पड़ने वाले ये बदलाव ग्लोबल वार्मिंग की वैश्विक परिषट्टा के स्पष्ट संकेत दिल्ली (फिंगर प्रिंट्स) हैं,

अमेरिका के दो वैज्ञानिकों कैमिला पार्मेसन तथा गैरी वैस्ट्लीयन ने वातावरण में अग्र बदलाव का जैविक प्रभाव जानने के लिए पौधों व जंतुओं की 1700 प्रजातियों पर अध्ययन किए, उनके अनुसार ये प्रजातियाँ लगभग 6.1 किमी प्रति दशक की रफ्तार से ध्रुवों की ओर खिसक रही हैं और प्रत्येक दशक के बाद वर्संत के मौसम जन्तुओं के अण्डे देने व प्रवास काल में 2-3 दिन की क़मी दर्ज की जा रही है, एक अन्य अमेरिकी वैज्ञानिक टैरी रूट और उनके सहयोगियों ने 1473 प्रजातियों पर किए गए अध्ययनों के हवाले से बताया है कि प्राणियों व पौधों में तापमान परिवर्तन से उत्तम प्रभाव ग्लोबल वार्मिंग के अमर को प्रमाणित करते हैं, उनके अनुसार अधिक ऊँचाई में रहने वाले ग्रामी इन परिचर्तनों में ज्यादा प्रभावित हो रहे हैं, क्वांटिक ये म्यान तापमान-परिवर्तन के प्रति अधिक संवेदनशील होते हैं,

हिमालय के 2500 किमी, के चिन्हों के अध्ययन बताते हैं कि मूर्मी लोकों द्वारा तीव्र गति से सिकुड़ रहे हैं और बृक्षसंग्रह ऊपर की ओर जा रही है, मूर्मा नदी का मूहाना गोमुख ग्लोबल वार्मिंग पिछले एक घटी में 19 किमी, पांच विस्तेका है,

अब इसके खिसकने की रफ्तार 98 फीट प्रतिवर्ष पहुँच गयी है, यह रफ्तार बनी रही तो वैज्ञानिकों का आकलन है कि सन् 2035 तक मध्य व पूर्वी हिमालय के सारे मौसमशब्द नुपु छो जायेंगे, चीन की तियेन शान पर्वतशृंखला में पिछले 40 वर्षों के दौरान ग्लोबल वार्मिंग को बर्फ एक चौथाई रह गयी है, हिमालय के अनेक जन्तु एवं वानस्पतिक प्रजातियाँ भी परिस्थितिकी में आए परिवर्तनों के कारण विलुप्त हो जायेंगी,

रूट कहती है कि उक्त परिषट्टा का भविष्य का संकेत अर सम्झौता चाहिए, क्योंकि ग्लोबल वार्मिंग के ये लक्षण पिछली एक सदी के तापमान में मामूली बढ़तीरी से पैदा हुए हैं, लेकिन सन् 2100 में विश्व पारिस्थितिकी में आने वाले बदलावों की कल्पना करें, जब तापमान के 3 डिग्री तक बढ़ जाने की उम्मीद की जा रही है, बाढ़ और सुखाड़ की संख्या और तीव्रता दोनों में बढ़ि की आशंका जताई जा रही है, बढ़े हुए तापमान में मलेरिया महामारी का रूप ले सकता है, 1997 में इंडोनेशिया के 6900 फीट ऊँचाई वाले क्षेत्र इरियान जाया में मलेरिया का हमला पहुँच चुका था,

ग्रीन हाउस प्रभाव के कारणों व परिणाम पर विवाद के बावजूद वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि तकनीक, अनुभव और संसाधनों की भागीदारी के जरिए हमें ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन पर नियंत्रण रखना चाहिए, ऊर्जा के प्रदूषण गहिन विकल्पों का प्रयोग करना चाहिए तथा अधिक से अधिक सार्वजनिक परिवहन को बढ़ावा देना चाहिए, यह उत्तरांशदार है कि ग्लोबल वार्मिंग और वातावरणीय परिवर्तन का असर पूरा शर्तों पर एक जैसा महसूस नहीं होगा, गरीब देशों की इसकी मार अधिक निर्ममत में रहती रहेगी,

□ आशुतोष उपाध्याय